International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 1; Issue 2; April 2016; Page No. 62-64

सौन्दर्य शास्त्र का विवेचनात्मक अध्ययन

प्रदीप तिवारी

Sanskrit Dept. Mithila Sanskrit Research Institute, Darbhanga, Bihar, India

प्रस्तावना

सौन्दर्य मानवमन की एक सहज प्रवृत्ति है अतः सौन्दर्य से सम्बद्ध चिन्तन प्राचीन काल से होता रहा है। पश्चिम में सौन्दर्यशास्त्र नाम से सौन्दर्य एवं कला से सम्बन्धी विवेचन का शास्त्र अठारहवीं शती में प्रादुर्भूत हुआ। भारत में सौन्दर्यशास्त्र नाम से किसी पृथक् शास्त्र का उद्भावन नहीं हुआ बल्कि यहाँ सौन्दर्यतत्त्व–मीमांसा प्राचीनयुग से ही प्रारम्भ हो गयी थी। इसलिए भारतीय चिन्तन में सौन्दर्यशास्त्र–सम्बन्धी किसी भी विषय का अभाव होते हुए भी काव्य शास्त्र के अन्तर्गत सौन्दर्य की विशद विवेचना हुई है।

सौन्दर्यशास्त्र हिन्दी में 'एस्थेटिक्स' का पर्याय बना। कुछ विद्वान इसे अलंकारशास्त्र भी कहते हैं किन्तु सौन्दर्यशास्त्र के सच्चे स्वरूप एवं व्यपदेश को समझने के लिए 'एस्थेटिक्स' शब्द पर विचार करना आवश्यक है। माना गया है कि 'एस्थेटिक्स' शब्द ग्रीक भाषा से प्राप्त किया है, जिसका मूल रूप है– Ato Qntikos यही ग्रीक शब्द बाद में 'AESTHESIS' बनकर उपस्थित हुआ, जिसका अर्थ होता है– ऐन्द्रिय सुख की चेतना। तदन्तर इस 'AESTHESIS' से 'ऐस्थेटिक' शब्द बना। पाश्चात्य साहित्य में पहले 'एस्थेटिक' शब्द ही प्रचलित था 'एस्थेटिक्स' नहीं। बाउमगार्तेन ने भी 'एस्थेटिक' शब्द का प्रयोग किया था। बहुत बाद में इस शब्द का बहुवचन रूप 'एस्थेटिक्स' प्रचलित हुआ।

सौन्दयशास्त्र की अवधारणा–

सौन्दर्यशास्त्र पर विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रस्तुत किये हैं यद्यपि भारतीय काव्यशास्त्र में सौन्दर्य–शास्त्र से सम्बन्धित कोई भी विषय प्राप्त नहीं होता। परन्तु भारतीय विद्वानों की रचनाओं में इसका अवलोकन हमें अवश्य ही प्राप्त होता है वहीं दूसरी ओर पश्चिम में सौन्दर्यशास्त्र अथवा AESTHETICS को लेकर पर्याप्त चर्चा आधुनिक युग से बहुत पहले ही शुरू हो गयी थी। अतः सौन्दर्यशास्त्र पर हमें दो अवधारणायें प्राप्त करते है– 1. भारतीय अवधारणा 2. पाश्चात्य अवधारणा

भारतीय अवधारणा–

भारतीय काव्यशास्त्र में यद्यपि सौन्दर्य–सिद्धान्त नामक किसी विषय की प्रतिष्ठा नहीं हुई अपितु सौन्दर्य के मूल तत्त्वों, विविध पक्षों, अंगों, स्वरूप आदि का अत्यन्त गहन विवेचन प्राचीन काव्यशास्त्र में ही उल्लेख प्राप्त होता है। भारतीय काव्यशास्त्र के प्रणेता वैदिक आचार्यों ने जिन सिद्धान्तों को मान्यता प्रदान की है उनमें रस के भाव पक्ष तथा अनुभूतियोग्य रूप का निर्वचन रस और ध्वनि–सिद्धान्तों के अन्तर्गत तथा समाहित रूप का विवेचन अलंकार एवं रीति–सिद्धान्तों में व्यापक रूप से उल्लेखनीय है। आचार्य कुन्तक के वक्रोक्तिसिद्धान्त तथा क्षेमेन्द्र के औचित्य सिद्धान्त में क्रमशः सौन्दर्य के मुलभूत रूप का तथा नैतिक पक्ष के उद्घाटन के साथ सम्मिलित अनुपात आदि तत्त्वों का सूक्ष्म चिन्तन भी देखा जा सकता है। नाट्य–शास्त्र से संबंधित ग्रन्थों में सौन्दर्य के प्रायोगिक स्वरूप के रूप में देखा गया है।

भारतीय काव्यशास्त्र को सौन्दर्यशास्त्र का अग्रदूत कहा जा सकता है। भारतीय काव्यशास्त्र में रस, ध्वनि, औचित्य, वक्रोक्ति, रीति एवं अलंकार, प्रत्येक सम्प्रदाय का मूल उद्देश्य प्रिया रूपी सौन्दर्य की स्थापना है क्योंकि काव्यशास्त्र का संबंध मूलतः काव्य के विभिन्न तत्त्वों एवं पक्षों के निरुपण से है तथा इस शास्त्रीय निरुपण में काव्य के प्रेम रूपी रमणीयार्थक सौन्दर्य के विशद रहस्यात्मक तत्त्वों का आलम्बन स्वतः प्राप्त हो जाता है।

'सौन्दर्य' शब्द का काव्य–शास्त्रीय अर्थ में सर्वप्रथम प्रयोग भामह द्वारा काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ में हुआ। भामह ने सौन्दर्य के स्थान पर चारुता 'शब्द' का आह्लादक प्रयोग किया। एक स्थान पर (काव्यशास्त्र 1/55) उन्होंने सौन्दर्य शब्द का भी उपयोग किया है। आचार्य दण्डी ने वर्णनपद्धति के संदर्भ में 'सुन्दर' शब्द का उपयोग किया। रीति–सिद्धांत के प्रवर्तक आचार्य वामन ने 'सौन्दर्य' शब्द को स्पष्टतः परिभाषित करने वाले प्रथम आचार्य हैं। उनके मतानुसार काव्य का सारतत्त्व है अलंकार और अलंकार का अर्थ है सौन्दर्य, इस प्रकार सौन्दर्य काव्य का प्राण तत्त्व है–

काव्यं ग्राह्यमलंकारात्।।
सौन्दर्यमलंकारः।।

अभिनवगुप्त द्वारा काव्य के अनेक संदर्भों में 'सौन्दर्य' शब्द का प्रयोग किया है। आचार्य कुन्तक ने सौन्दर्य की सत्ता विशिष्ट रूप में प्रतिष्ठित करते हुए उसकी आनन्दात्मकता को व्यञजनात्मक व्यंजित किया है। 'वक्रोक्तिजीवितम्' में मुख्यतः चार स्थलों पर आचार्य कुन्तक द्वारा 'सुन्दर' एवं 'सौन्दर्य' शब्दों का प्रयोग हुआ है। उनका मत है–

वर्णविन्यासविच्छित्तिपदसंधानसम्पदा।
स्वल्पया बन्धसौन्दर्यं लावण्यमभिधीयते।।

वर्णविन्यास की शोभा से युक्त पदों की स्वल्प सम्पत्ति से उत्पन्न रचना का सौन्दर्य लावण्य कहलाता है।

वैदिक काव्यशास्त्र में 'सौन्दर्य' शब्द के लिए विभिन्न विद्वानों ने अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया है। इनमें शोभा, चारुता, रमणीयता, विच्छित्ति तथा छाया शब्द अधिक प्रचलित हुए हैं। शोभा शब्द का प्रयोग करते हुए आचार्य दण्डी कहते हैं– 'काव्यशोभाकरान्

धर्मानलंकारान् प्रचक्षते' वही वामन कहते हैं– 'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्मा गुणाः।' इसी प्रकार साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वानाथ ने अलंकार की स्थिति को सूचित करने के लिए 'शोभा' शब्द का आश्रय लिया। भामह के अतिरिक्त आनन्दवर्धनाचार्य ने 'सौन्दर्य' के पर्याय रूप में 'चारुता' शब्द का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया।

भारतीय काव्यशास्त्र में 'रमणीय' शब्द को व्यवहृत करने वाले प्रमुख आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ, आनन्दवर्धन, राजशेखर तथा कुन्तक हैं। इन सभी का मत है कि सुन्दर एवं रमणीय शब्द परस्पर पर्यायवाची होने से दोनों का ही सामान्य धर्म 'रंजकत्व' है। पण्डितराजजगन्नाथानानुसार– 'रमणीयार्थ–प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।' इन्होंने रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य माना है। आचार्य कुन्तक द्वारा 'सौन्दर्य' शब्द के पर्यायवाची रूप में 'छाया' एवं 'विच्छित्ति' शब्दों को प्रयुक्त किया गया है।

आधुनिक भारतीय चिन्तकों ने 'सौन्दर्य' के विभिन्न पक्षों पर मत प्रकट किया है। आधुनिक चिन्तकों ने अपने–अपने द्वारा 'सौन्दर्य' की उन परतों को उजागर करने का प्रयास किया है जो पूर्ववर्ती आचार्यो द्वारा उद्घाटित नहीं हो सका था। इसके अतिरिक्त इन सौन्दर्य मर्मज्ञ विद्वानों ने सौन्दर्य के स्वरूप का मौलिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से अनुसंधान करके उसके वस्तुनिष्ठ एवं भावनिष्ठ पक्षों पर भी चिन्तन व्यक्त किये हैं। आधुनिक भारतीय चिन्तक रवीन्द्रनाथ ठाकुर का मत है कि जो उपयोगिता की किसी भावना के बिना हमें आनन्द प्रदान करती है, उसे सौन्दर्य की भावना कहा जाता है। सौन्दर्य के साथ आनन्द का घनिष्ठ सम्बन्ध बताते हुए उन्होंने सौन्दर्य का लक्षण 'निष्प्रयोजन आनन्द' को स्वीकार किया है। आचार्य रामचन्द्रशुक्ल सौन्दर्य की वस्तुनिष्ठ सत्ता के पक्षधर हैं तो श्री हरिवंश सिंह शास्त्री जी सौन्दर्य की अनुभूति के लिए बुद्धि की निष्कामता से जोड़ते हैं।

एक ओर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सौन्दर्य की सत्ता वस्तु में न मानकर व्यक्ति की अपनी रुचि में स्वीकार करते हैं। प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा की दृष्टि में सौन्दर्य वस्तुगत न होकर आत्मगत होता है। सौन्दर्य की भारतीय अवधारणा पर टिप्पणी करते हुए डॉ0 नगेन्द्र ने कहा है कि भारतीय सौन्दर्यदर्शन अद्वन्द्व और सामरस्य का दर्शन है, अभिव्यक्ति के स्तर पर यह सौन्दर्य है और अनुभूति के स्तर पर आनन्द है।

इस विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राचीन काव्यशास्त्र में 'सौन्दर्य' की सत्ता को महत्त्व दिया गया है। यद्यपि इसे किसी शास्त्र के नाम से अभिहित नहीं किया गया है परन्तु इसकी सत्ता को भी स्वीकृति दिया गया है। अलंकार सिद्धान्त के समर्थक अलंकार को सौन्दर्य का पर्याय मानते हैं तो रीतिसिद्धान्त के अनुयायी सौन्दर्य के वस्तुगत रूप के पक्षधर हैं। विभिन्न कवि आलोचकों के विचारों के आलोक में यह निर्णयपूर्वक कहा जा सकता है कि भारतीय दृष्टि सौन्दर्य के भावनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ पक्ष के समन्वित स्वरूप को महत्त्व प्रदान करती है। यहाँ कुछ विद्वानों ने सौन्दर्य के भाव पक्ष को महत्ता दी है तथा कुछ ने वस्तुनिष्ठ दृष्टि से उसके तत्त्वों की चर्चा की है। कितना ही प्रयास करने पर भी ये विद्वान वस्तु एवं भाव को सर्वथा पृथक–पृथक रखकर अपने विचारों की अभिव्यक्ति देने में समर्थ नहीं हो सके हैं। अन्ततः हम यही कह सकते हैं कि सौन्दर्य के लिए स्वरूप एवं प्रभाव, दोनों का होना तो अतिआवश्यक है ही, साथ सौन्दर्य के दृष्टा में सहृदयता का गुण भी अपेक्षित है, क्योंकि इसके अभाव में सौन्दर्य का वास्तविक आंकलन सम्भव नहीं है। यही भारतीय अवधारणा का मूल रहस्यात्मक तत्त्व है।

पाश्चात्य अवधारणा–

भारतीय मनिषियों के समान ही पाश्चात्य विद्वानों ने सौन्दर्य को लेकर अपने विभिन्न मत को प्रस्तुत किया हैं। सुकरात के शिष्य यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने क्रमबद्ध तथा सैद्धान्तिक दृष्टि से सौन्दर्य का विवेचन प्रस्तुत किया है। शिवत्व में सौन्दर्य को स्वीकार करने वाले प्लेटो ने सौन्दर्य को सृष्टि का मूल तत्त्व बताते हुए सौन्दर्य के चार स्तर बताए हैं–

1. सार्वभौम भौतिक सौन्दर्य– सौन्दर्य की सत्ता व्यक्तिगत न होकर सार्वभौमिक मानते हुए मानव सौन्दर्य को विश्व सौन्दर्य का अंग मानते हैं। 2. चेतना का सौन्दर्य– सौन्दर्य मात्र शरीर का धर्म ही न होकर चेतना के भीतर भी विद्यमान रहता है, 3. नियम व मर्यादा का सौन्दर्य– इसे नैतिक सौन्दर्य भी कहा जाता है। 4. सौन्दर्य का चौथा व अन्तिम स्तर है– शुद्ध बुद्धि का सौन्दर्य अर्थात् प्रज्ञात्मक सौन्दर्य। प्लेटो ने इसे प्रकाश–रूप माना है जो आत्मचैतन्य का प्रतीक माना जाता है। जिस प्रकार एक ज्ञानी मनुष्य को ज्ञानी बनने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार किसी वस्तु के सुन्दर होने के लिए उसमें सौन्दर्य होना सर्वथा आवश्यक होता है। प्लेटो के अनुसार जिस प्रकार का भेद 'विशेष' एवं 'प्रत्यय' में होता है ठीक वैसा ही भेद 'सुन्दर' एवं 'सौन्दर्य' में भी होता है। उनके अनुसार यह तीन तथ्य विचारणीय हैं– 1. वस्तुओं की सुन्दरता का कारण सौन्दर्य ही है। 2. एक ही सौन्दर्य भिन्न–भिन्न वस्तुओं में भिन्न–भिन्न प्रतिबिम्बित होता है। 3. किसी भी वस्तु में निहित सौन्दर्य सम्पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं हो पाता।

प्लेटो की सौन्दर्यसम्बन्धि यह विवेचना आत्मवादी सौन्दर्य आंकलन का प्रस्थानबिन्दु मानी गयी है उनके इस मत का अनुकरण करने वाले हैं– प्लोटिनस, ऑगस्टीन, ऐक्विनस, कांट तथा हीगेल। प्लोटिनस भी प्लेटो के समान ही परमशक्ति के शिवत्व में सौन्दर्य की स्थिति स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार सौन्दर्य की भावना मूलतः एक आध्यात्मिक अनुभूति या रहस्यानुभूति है। कोई वस्तु हो अथवा शरीर अथवा किसी कलाकार की कलाकृति वह अपने अंगों के साथ पूर्ण होते हुए भी तब एक सुन्दर नहीं लग सकती, जब तक उनमें सौन्दर्य की अभिव्यक्ति नहीं होती। प्लेटो के समान शिवत्व में सौन्दर्य की स्थिति स्वीकारते हुए भी वह अपने पूर्ववर्ती दार्शनिकों के समान रूपात्मक नियमों के विपरीत 'जीवन' को प्रधानता देते हैं। उनका मत है कि चाहे कोई कलाकृति कितनी ही सुन्दर क्यों न हो परन्तु 'जीवन' न होने के कारण वह एक कुरूप व्यक्ति से कम सुन्दर ही होती है।

भरत, पण्डितराज जगन्नाथ, सुरेन्द्रनाथबारलिंगे, देकार्त, सुकरात, अरस्तु, युंग तथा रिचर्डसयह विद्वान वस्तुपरक सौन्दर्य के प्रमुख समर्थक हैं। इनका मत है कि सौन्दर्य वस्तु के रूप–आकर में ही निहित होता है इसलिए वस्तुयें सुन्दर प्रतीत होती हैं। यदि वस्तु में सौन्दर्य नहीं होगा तो दर्शक सौन्दर्य के दर्शन नहीं कर पायेगा। कलाकृति की अपनी संरचना या वस्तु की रूप निर्मिति ही उसका सौन्दर्य है।

विचारकों का एक अन्य समुदाय सौन्दर्य की आत्मगत सत्ता का विवेचन करता है। इस सिद्धान्त के प्रमुख समर्थक हैं– अभिनव गुप्त, संस्कृत कवि माघ, डॉ0 नगेन्द्र, बाबू गुलाबराय, प्लेटो, क्रोचे, हीगल, कान्ट, कालिंगवुड, सेंट आगस्टीन, टामस ऐक्विनस, तथा प्लोटिनस। इस आत्मवादी सौन्दर्यशास्त्र का उद्देश्य सौन्दर्य अथवा कला के आध्यात्मिक अर्थ की व्याख्या प्रस्तुत करना है। इस मत के समर्थक विद्वानों के लिए सौन्दर्य परम सत्ता अथवा सृष्टि विधान की पारमार्थिक एकता या समन्विति का प्रतीक है। इनका सौन्दर्य मूलतः आत्मा से सम्बद्ध हैं इनके मतानुसार "जब कोई दर्शक किसी सुन्दर वस्तु के संसर्ग में आता है तो सर्वप्रथम उस वस्तु के गुणों का प्रभाव दर्शक (सामाजिक) की ज्ञानेन्द्रियों पर अंकित हो जाता है। फलस्वरूप सहृदय दर्शक में सौन्दर्य भाव जाग उठते हैं, फिर ये इन्द्रियों के संवेदना से मन के संसर्ग में आकर मानस–संवेदनों का रूप धारण कर लेती है और सौन्दर्य विकास की अन्तिम सीढी आत्मा के पूर्वसंचित संस्कारों के रंग में रंगे जाने से आत्मअनुभूति का मार्मिक रूप पा जाते हैं। तभी दर्शक कहता है कि अमुक वस्तु सौन्दर्यशाली है।" संक्षेप में सौन्दर्य से युक्त अवधारणा उभयनिष्ठ अथवा समन्वयवादी सौन्दर्य की होती है। वस्तुतः सौन्दर्य आत्मा का ही स्वरूप है, इसीलिए वह मानविकी विषयों की अनुभूति का मर्मज्ञ विषय बनता है।

संदर्भ सूची

1. काव्यांलकार सूत्रवृत्ति 1–1–1
2. काव्यांलकार सूत्रवृत्ति 1–1–2
3. वक्रोक्ति जीवितम्– कुन्तक 1/32
4. काव्यादर्श, दण्डी 2/1
5. काव्यालंकार सूत्रवृत्ति, वामन 3/1–1
6. The Philosophical of fine Art-Hegel.
7. सौन्दर्यशास्त्र की पाश्चात्य परम्परा– राजेन्द्र प्रताप सिंह, पृ. 94
8. काव्य बिम्ब– डॉ0 नगेन्द्र, पृ. 47